।। श्री राम समर्थ ।।

श्री समर्थ वाग्देवता मंदिर, धुळे, महाराष्ट्र, भारत

रामवाड़ी, धुळे(धुले)- 424001, महाराष्ट्र, दूरध्वनि क्र. 02562 236287

रामकथा का प्रसार ब्रह्मांड के उस पार तक करें।

प्रा.दे.दि.डोंगरे — कार्याध्यक्ष — 9890246711

शरद कुबेर — अध्यक्ष — 989052369

आदिनारायणं विष्णुं ब्रह्माणं च वसिष्ठकं। श्रीराम मारुतीं वन्दे रामदासं च श्रीधरं।।

नमः शान्ताय दिव्याय सत्यधर्मस्वरुपिणे। स्वानन्दामृत तृप्ताय श्रीधराय नमो नमः।।

हमारा यह परम सौभाग्य है

कि श्री समर्थ रामदास स्वामी द्वारा 'टाकळी' यहाँ की गई तपस्या के काल में, जब वे 14 वर्ष के थे, तब उनके हाथ से 7 कांडों में संस्कृत में लिखी गई 1720 पृष्ठों की पोथी- 'श्री वाल्मीकि रामायण' की सम्पूर्ण प्रति यहाँ के श्री समर्थ वाग्देवता मंदिर में सुरक्षित रखी हुई है। एक ही व्यक्ति की हाथ से लिखी हुई लिखावट में 400 वर्ष पूर्व की यह एकमात्र प्रति है। यह सुंदर अक्षरों में साफ सुधरे ढंग से लिखी हुई पांडुलिपि है।

रामेण रामदासेन लिखितं 'वाल्मीकि रामायणम्' नामक यह पोथी(ग्रंथ)

श्री समर्थ वाग्देवता मंदिर की अधिष्ठाता देवता है।

इस प्रति का अध्ययन, अन्वेषण तथा इसकी प्रकाशन परियोजना गत तीन वर्षों से जारी है। अब बालकाण्ड का प्रकाशन पूर्ण होने के पश्चात आगे के सात खंडों के प्रकाशन का कार्य तीन-चार वर्षों में पूर्ण होगा। सभी खंड प्रकाशित हो जाने पर इससे आगामी अनेक पीढ़ियों के लिए शोधकार्य एवं अन्वेषण के लिए भरपूर सामग्री उपलब्ध हो सकेगी। इससे श्री समर्थ के भक्तों तथा श्री समर्थ के हाथों लिखी हुई रामायण प्राप्त करने वालों को इतनी प्रसन्नता होगी की उसका वर्णन नहीं किया जा सकता।

यह श्री समर्थ भक्तों का दुर्लभ सौभाग्य ही था कि समर्थहृदय श्री.शंकर श्री. देव की प्राप्त प्रति- श्री.शंकर श्री. देव इन्होने अपने प्राण (जान) की तरह संभाल कर श्री समर्थ वाग्देवता मंदिर में अधिष्ठात्री देवता की निधि के रुप में सन्मान सहित रखी थी। इस प्रति को

आर्थिक कारणों के साथ-साथ वृद्धावस्था के कारण उन्हें प्रकाशित करने का सौभाग्य नहीं मिल पाया। वरना अब तक यह रामायण सारी दुनिया में मान्य हो चुका होता। श्री समर्थ की प्रेरणा तथा परम पूज्य भगवान श्री श्रीधरस्वामीजी की कृपा एवं आशीर्वाद से श्री.शंकर श्री. देव इनके कार्य को कुछ इस प्रकार पूरा करने की शुरुआत की है कि श्री समर्थ का यह कार्य अनुसंधान एवं अन्वेषण की सभी कसौटियों पर शास्त्रसम्मत ढंग से खरा उतर सके। अब आपको इस महत्त्वपूर्ण परियोजना का अंदाजा आ गया ही होगा।

इसलिए समाज के सभी लोगों; श्री समर्थ के स्वाभिमानी व्यक्तियों एवं संस्थाओं तथा संस्कृत व संस्कृति को सहायता करने वाले समूहों को इस कार्य में हर प्रकार की सहायता करना अत्यंत आवश्यक है।

आपकी ओर से इस कार्य में उदारतापूर्वक आर्थिक सहायता प्राप्त हो और आपको श्री समर्थ सेवा का लाभ मिले, इसीलिए यह निवेदन किया जा रहा है।

।। श्री राम समर्थ ।।

रामेण रामदासेन लिखितं वाल्मीकि रामायणम्

बालकाण्डम्

इस परियोजन की अद्वितीयता एवं आवश्यकता

1) यद्यपि लंबे अरसे से 'रामायण' की मूल प्रति की खोज किए जाने से पूर्व से 'रामायण' प्रत्येक भारतीय के हृदय में विद्यमान है, पर यह उपलब्ध नहीं था। सर्व श्रेष्ठ प्रकाशकों ने आलोचनात्मक संस्करण प्रकाशित किए हैं, हालांकि वे एक तरह की हाथ की लिखावट वाली पूरी प्रति के बजाय अनेक स्थानों से प्राप्त अनेक पांडुलिपियों पर आश्रित हैं।

2) फिलहाल हमारे पास श्री समर्थ वाग्देवता मंदिर, धुले में जो पांडुलिपि है, वह 400 वर्ष पुरानी है। यह वाल्मीकि रामायण की पूरी प्रति महान संत श्री समर्थ रामदास स्वामी द्वारा उनके हाथ से लिखी, हुई है।

3) इसलिए यह दावे के साथ सुरक्षित रुप से कहा जा सकता है कि यह पांडुलिपि विश्वसनीय है और इसका सारे विश्व में अद्वितीय महत्त्व है। इस तरह यह हमारी राष्ट्रीय पैतृक सम्पत्ति हो जाती है। हमारे देश के प्रत्येक भारतीय को इस बात का गर्व होना चाहिए। इसलिए हमारी भावी पीढ़ी के विद्यार्थियों और भक्तों के लिए इसे उपलब्ध कराना बहुत आवश्यक है।

4) यूँकि यह 17 वीं शताब्दी की हाथ से लिखी हुई संस्कृत भाषा की पांडुलिपि है, इसलिए इसका आधुनिक लिपि में डी.टी.पी. करना तथा इसी प्रकार की अंकीय लिपि में प्रतिलिपि तैयार करना बहुत आवश्यक है।

5) यह भी महसूस किया जाता है कि विश्व के विद्यार्थियों की समझ में आने के लिए इस का मराठी और अंग्रेजी में अनुवाद, संक्षेप और टीका लिखा जाना भी आवश्यक है।

6) इन सभी अपरिहार्य आवश्यकताओं के परिणाम स्वरूप इस भारी-भरकम काम के लिए काफी पैसों की आवश्यकता होगी।

7) जब यह परियोजना पूरी हो जाएगी, तो यह भारतीय एवं विदेशी शोध छात्रों तथा साथ ही साथ भक्तों के लिए एक अमूल्य निधि साबित होगी।

।। श्री राम समर्थ ।।

रामेण रामदासेन लिखितं वाल्मीकि रामायणम्

बाल काण्डम्

संस्करण की विषय-सूची

1) आमुखम-भूमिका

2) ग्रंथानुक्रम-सूची

3) श्री समर्थ वाग्देवता मंदिर

4) समर्थ रामदास स्वामी

5) रामायणम् की पांडुलिपि मंदिर में कैसे आई ? -टिप्पणी

6) स्तोत्राणी

7) समर्थ रामदास स्वामी की लेखन शैली-टिप्पणी

8) संस्कृत सर्गानुक्रमणिका - सर्गों की सूची

9) 17 वीं शताब्दी की मूल संहिता - आधुनिक संस्कृत में डी.टी.पी. प्रतिलिपी

10) परिशिष्ठानि -

अ) मालामंत्र

ब) छंदोविन्यास

क) लेखन संचार

ड) विवरणात्मक टिप्पणी

11) भाषानुवाद-मराठी में

12) भाषानुवाद-अंग्रेजी में

13) चरणानुक्रमणिका - छंदों की सूची

जय जय रघुवीर समर्थ

।। श्री राम समर्थ ।।

रामेण रामदासेन लिखितं वाल्मी कि रामायणम्

बालकाण्डम् के अध्ययन में संलग्न प्रमुख विद्धान/छात्र (सहभागी विद्धत्जन)

- पण्डित वसंतराव गाडगीळ, महामहोपाध्याय, उम्र 80 साल, पुणे (पूना.), महाराष्ट्र.
- प्रोफेसर डॉ. गणेश थिटे, उम्र 80 साल, बोरी एक्स. हॉन. संस्कृत विभाग, सावित्रीबाई फुले विद्धयापीठ, पूना, महाराष्ट्र.
- डॉ. नीलेश वैशंपायन, उम्र 29 साल, व्याकरणशास्त्री, आय.आय.टी., मुंबई, महाराष्ट्र.
- प्रोफेसर डॉ. रवींद्र मुळे, उम्र 58 साल, विभागप्रमुख (डायरेक्टर) प्रगत संस्कृत अध्ययन केंद्र, सावित्रीबाई फुले विद्धयापीठ, पुणे (पूना.) , महाराष्ट्र.
- श्रीराम वेळापुरे, उम्र 77 साल, पूना, महाराष्ट्र.
- डॉ. श्रीनंद बापट, उम्र 55 साल, पूना, महाराष्ट्र.
- प्रोफेसर डॉ. उर्मीला आरनाके, उम्र 60 साल, सातारा, महाराष्ट्र.
- प्रोफेसर डॉ. रूपाली कापरे, उम्र 59 साल, संगमनेर, महाराष्ट्र.
- प्रोफेसर डॉ. अंजली पर्वते, उम्र 55 साल, वाई, महाराष्ट्र.
- डॉ. आशा नावडीकर, उम्र 60 साल, पूना, महाराष्ट्र.
- प्रोफेसर डॉ. व्ही. रमण, उम्र 55 साल, आंध्र विद्यापीठ.
- डॉ. अरुंधती जोशी, उम्र 61 साल, अहमदनगर, महाराष्ट्र.
- श्री. न्यायमूर्ती ए. जोशी, उम्र 63 साल, नागपूर, महाराष्ट्र.
- श्री. न्यायमूर्ती एस. जी. कुलकर्णी, उम्र 65 साल, कोल्हापूर, महाराष्ट्र.
- डॉ. मुळेशास्त्री, उम्र 45 साल, त्र्यंबकेश्वर.
- प्रोफेसर डॉ. गंधे, उम्र 55 साल, उज्जैन.
- डॉ. कमल वैद्य, उम्र 86 साल, सांगली, महाराष्ट्र.
- डॉ. व्ही. ए. चितळे, उम्र 76 साल, धुळे, महाराष्ट्र.
- समर्थ भक्त बाळुबुवा रामदासी, उम्र 60 साल, सज्जनगड, महाराष्ट्र.
- भारवाही (कार्यवाहक) तथा छात्र संयोजक : श्री समर्थ भक्त शरद कुबेर, महाराष्ट्र.

।। श्री राम समर्थ ।।

बालकाण्डम्

रामेण रामदासेन लिखितं वाल्मीकि रामायणम्

विशेष संस्करण के बारे में जानकारी

- इस संस्करण में संस्कृत लिपि में हाथ से लिखे हुए कुल 141 पृष्ठ हैं।
- हाथ की लिखावट बहुत अच्छी है, शुरु से लेकर अंत तक कहीं कोई बदलाव या काटकूट नही है। हा पृष्ठ पर नंबर दिए हैं।
- लिखने का ढंग अच्छा और पुराना है। लिखावट मुडुआ (मोडी) लिपि से मिलती जुलती है। (कृपया 'लेखन शैली' परिशिष्ट देखें।)
- पद्य के चरणों की कुल संख्या 2501 है, जो अन्य संस्करणों से भिन्न है। (चळपी 104 से चळपी 250)
- सर्गों की कुल संख्या 81 है। किसी भी प्रति में यह 78 से अधिक नहीं हैं।
- रामेण रामदासेन लिखितं वाल्मीकि रामायणम् के 79 वें, 80 वें और 81 वें सर्ग में राजा दशरथ द्धारा कैकेय राज्य में राजकुमार भरत के व्यवहार-आचार के बारे में उन्हें दी गई सलाह-सुझाव का वर्णन किया गया है। कैकय भरत के नाना का राज्य था, जहाँ भरत को लंबे समय तक रहना था।
- लगभग सभी सर्गों के शीर्षकों के नाम अंत में पद्य में दिए गए है, जो अपने आप में अनूठे और अद्‌वितीय हैं।
- लगभग सभी सर्गों में पद्यों की संख्या में उल्लेखनीय अंतर हैं। (अधिक से अधिक सर्ग 3 में 150 और कम से कम सर्ग 58 में 7)
- चरणों के निर्माण में एक पद्य में अंतर है। (विशेषरूप से निर्णय सागर संस्करण अध्ययन)
- श्री समर्थ रामदास का शब्द भंडार आश्चर्यजनक है। विशेष स्थान पर विशेष प्रकार के शब्दों के प्रयोग से साहित्य उत्तम कोटि का बनता है। (विवरणात्मक टिप्पणियाँ देखें।)
- मूल लेखन में कुछ हद तक मध्यांदीन शाखा की छाप दिखाई देती है।
- प्रत्येक खंड पर श्री समर्थ रामदास स्वामी की नाम-मुद्रा, (लेखक), दिन, तारीख, तिथि, पक्ष (शुक्ल/वद), माह (महिना), वर्ष (शक) लिखा हुआ है। यह आधारभूत विश्वसनीय जानकारी अधिकोश शोधकर्ताओं को उनके अध्ययन के दौरान प्रभावित किए बिना नहीं रहती। अपने किस्म की इस अद्‌विता ने विश्वसनीयता की छाप गहरी कर दी है।
- हाथ से लिखी हुई जिस मूल प्रति से श्री रामदास स्वामी जी ने इस पांडुलिपि की प्रतिलिपि तैयार की होगी, वह अभी तक प्राप्त नहीं की जा सकी है। उसकी खोज जारी है।

।। श्री राम समर्थ ।।

बालकाण्डम् - रामेण रामदासेन लिखितं वाल्मीकि रामायणम्

अध्यय में सुधार लाने के लिए किए जानेवाले प्रयास

1) जिस पांडुलिपि से श्री समर्थ ने यह पोथी तैयार की होगी, उस पांडुलिपि की खोज।

यह जानकारी मिलने पर कि पंचवटी और कालाराम मंदिर (दोनों नाशिक से - जहाँ श्री समर्थ अपनी तपस्या के समय ठहरे थे) की पांडुलिपियाँ - डीएवी लाइब्रेरी, लाहौर में हैं, जहाँ से 'वाल्मीकि रामायणम्' का प्रथम आलोचनात्मक संस्करण प्रकाशित हुआ था, हमने लाहौर लाइब्रेरी, से संपर्क स्थापित करने की कोशिश की, पर हमें कोई लाभ नहीं हुआ।

हमें यह जानकारी मिली कि 1947 में स्वदेश वापसी के तहत ये पांडुलिपियाँ अम्बाला कालेज की लाइब्रेरी को भेज दी गई थीं। हमने वहाँ के प्रिंसिपल, संस्कृत विभाग के विभागाध्यक्ष तथा चीफ लायब्रेरियन से संपर्क किया और इस बात की पुष्टी हो गई कि डीएवी लाइब्रेरी, लाहौर की पांडुलिपि अम्बाला कालेज को नहीं मिली थी। इसके अलावा यह लाइब्रेरी प्रकाशित पुस्तकों की लाइब्रेरी है।

हमने होशियारपुर कालेज की लाइब्रेरी से संपर्क किया, जहाँ लाहौर सें पांडुलिपियाँ भेजी गई थीं। उनके पास पांडुलिपियाँ है, पर दुर्भाग्य से यह जानकारी मिली कि भारत विद्या विभाग यहा से चंडीगढ़ कालेज में स्थानांतरीत, कर दिया गया है। इसके बाद हमने चंडीगढ़ कालेज जाने का निश्चय किया। वहाँ, से हमने नाशिक मूल के बालकाण्ड की प्रतियाँ प्राप्त कीं।

इन दोनों पांडुलिपियों को देखने पर पता चला की कुछ हद तक यह रामेण रामदासेन लिखितं वाल्मीकि रामायणम् के बालकाण्डम् से मेल खाती है।

लेकिन हम जिस पांडुलिपि का अध्ययन कर रहे है, इस पांडुलिपि से उस पांडुलिपि का काल बहुत बाद का है।

इस लिए इस प्रयास का कोई सार्थक नहीं हुआ। हमारा प्रयास जारी है।

2) पांडुलिपि की इनर्जी वेव जाँचने के लिए माइक्रो स्कैनिंग :

तेलंगाना के भाग्यनगर के मान्यताप्राप्त वैज्ञानिक डॉ. मन्नम मूर्ति ने वेव्ज की वैज्ञानिक ढंग से जाँच करने के लिए यूनिवर्सल थर्मो स्कैनर (अौ ड्लरपपशी) नामक उपकरण विकसित किया है।

आप और आपकी संस्था भी चाहती होगी कि श्री समर्थ के मूल साहित्य प्रकाशित हों। इस परियोजना को कोई दानवीर महाशय अकेले ही पूरी करने का प्रायोजकत्व स्वीकार कर सकते हैं और श्री समर्थ के सेवा कार्य में दिल खोल कर मुक्त हस्त सहायता कर सकतें हैं। कोई भी व्यक्ति यथाशक्ति सहायता कर सकता है। हम श्री समर्थ से प्रार्थना करके आपसे विनंती करते हैं कि आप इस कार्य में यथाशक्ति अवश्य सहायता करें। यह श्री समर्थ की भिक्षा है। आप श्री समर्थ की सेवा के लिए - आपके जो भी अनुकूल हो, वह-वह तुरंत करें। (जे जे अनुकूळ। ते ते करावे तात्काळ।।)

इस संस्था को दी गई आर्थिक सहायता आयकर अधिनियम की धारा 80- जी के अंतर्गत आयकर-रहित होगी।

हमें आपसे अनुकूल प्रतिसाद की अपेक्षा है। शेष श्री समर्थ की कृपा।

इस पवित्र उपक्रम के लिए आप निम्नलिखित योगदान दे सकते हैं :

- रु. 5.00 लाख या इससे अधिक रक्कम देकर आधारस्तंभ होना। (यह एक काण्ड का अनुमानित केवल प्रकाशन खर्च है ।)
- रु. 1.00 लाख या उससे अधिक रकम देकर आश्रयदाता होना । (यह एक काण्ड का प्रत्यक्ष संशोधन खर्च है।)
- रु. 15, 000 अथवा इससे अधिक रकम देकर संच दाता होना । (यह आठ खंडों के एक संच (समूह) का अनुमानित प्रकाशन खर्च है ।)
- रु. 2, 500 या इससे अधिक रकम देकर ग्रंथ दाता होना । (यह एक ग्रंथ का अनुमानित प्रकाशन खर्च है।)
- दी गई राशियाँ (दान) आयकर-छूट में 80-जी के अंतर्गत छूट की पात्र हैं। ये राशियाँ सीधे बैंक में डाल सकते हैं।

बचत खाता :

SHRI SAMARTH VAGDEVATA MANDIR

BANK OF BARODA, RAMWADI Br., DHULE, MAHARASHTRA.

A/C NO. 18740100010355 RTGS BARBORAMUDHU 2940

दान देने वाले लोगों का यथोचित और सराहनीय उल्लेख किया जाएगा।

डॉ.वि.अ.चितळे	प्रा.नकाणेकर	श्री.नगर देवळेकर	प्रा. डोंगरे	स.भ.कुबेर
अध्यक्ष	चिटणीस	उपाध्यक्ष	कार्याध्यक्ष	अध्यक्ष

सत्कार्योत्तेजक सभा श्री समर्थ वाग्देवता मंदिर